

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

भीगले या य नवः छे नमः भी मा अर्ण क्लो के ए य नमः। मानि द्वा न द्वा ने वा न दि वं निज्ञा व जुन्द । वोगी म् मी इं मय नो ग वे दं श्वी मा इं इति व्यव हे ना हि । प्रयोग हवः मि समा व मन हे ते व विभाग हो हो के के हो हि इदिमः। का मि के यह नव के सा भा विद्या की ने दे वे दे वे व ये के न हि इं ए प्र व हे हो हो हि इदिमः। का मि के यह न हो व विद्या की विद्या की विद्या की कि विद्या की है है है कि वा वा न मा की विद्या की विद्या की की विद्या की विद्या की विद्या की की विद्या की की विद्या की विद्या



M844 Accession No: 40+74 Aiffe'- 420012014

TW: 19.7

.Checkod 2012

AAAAAAAAAA

महम्मं लाजमं मुखनद्द इट म्यालंबन्दवाधिमें अला अर्णेकाम वान हिना चादिन लातं मं प्रकादित तं निकार के स्वादेश का स्वादेश का

ति वित्राम्य न छ व छ दः हिं ली ने हों था कि रहीं की अदेश अदेश के प्रवाद की अव जा नाम्य के नवि वित्र की नित्र क

 भेशी भंगताः हर्ना त्राम्वर्तिताह्ने। भेशी वंगनाः हर्ना त्राम्वनान् से भेशी नंगनाः हर्ना त्राम्वर्त्ते त्राम्वर् त्रामित्र भेशी हमेमः हर्ना त्राम्वर्गान नाह्ये हिन्दां ने ने ह से त्रामित्र हिन्दां ने हान क्ष्या क्ष्या क्षित्र क्ष्या क्ष्या

अभिराम 8

3)

9.1777

विम्लीनिव का अत्ति महिति विम्त नित् सं क्षेत्र निव महिती महीन के महिता ता नित् व्यनता महिता के विभिन्न ता प्रमाण महिता के विभिन्न ता प्रमाण महिता के विभिन्न ता प्रमाण महिता के विभिन्न के कि प्रमाण महिता के प्रमाण

4

分析的。



THE WANTEDAR TO A SECTION OF THE PARTY OF TH द्रानिद्रम् ने जुन्त र देश मा क्या मुद्रो वस स्था भूति । सुन भूति । सून भूति । सून भूति । सून भूति । सून भूति । विविध्नेत्र्यः नामकत्तिष्ठात्राम् जात्तिष्ठात्ति विविध्नेति । विदेशके विवासिक विविधि नागजपने व नाहाद्यमाणां दिज्ञालागः वे द्यागाः। शतिवाल्यावदेषे प्रथम वर्णाः। नोवदे नंदरण मिनंदर में राज्य में राज्य में राज्य में मानंदन मिने राज्य में निर्देश के राज्य में निर्देश के राज्य में मानानावार एक लेकर जानवार अध्याप अधिक किया है। जाना विकास के जान के ज जंदमानः। प्रतः। इतः इता प्रकारियदमान्या निमानिक क्षेत्रमान में भागा अन्य है में जनः इता प्रकार में अमर्गिता अमेर ध्योनिय न्या अन्यान विन्यान विन् जारिका वास ता वास के ता से मा अव दा में तुने दिन माना अव के मा वित्र जिन मानी कि वं दल सारण गरमाः। एवं तं ने ने ने ने ना सार्वित मार्ग प्रमान माना प्रमान कर्ता । त्यामने स्वीम् स्वाद्याप्ति। हो तेया वाच्या वालीमा कार्याता का प्रमित्र का प्रमित्र वाच्या

马利用 明行行.

िक्स सर्हे मिनेता. प्रवीधान्य स्मिनाइ स्विधि स्वाया समिनियम अस्परे असिकित समिनेता प्रवास समिनेता । रानं प्रपात जं पिथितान्त्रादिना दावे । मेत्र मादी समास प्रस्तरं क्षिये भी त्र मात्रे विश्व दिन म यम अभा अध्यक्ति द्यार्त्यार्जा भीतित्रोयदेत, यश्ययादं क उद्वेद्यमानं स्त्रमेन स्त्रमेन स्त्रमेन वो नेनमुन्ना दिखं त्रापिते न्त्र माना दिने के लापने हिन हो सामान कर । हा दूथे की हो में की ना किया ना ने कर । द्तिन्त्र निषय र प्रमान दिन अयं कु की व्याप सम्मा वादम् क्र क्षाण से अतु है र के मिक साम मा क्या मा कि उड जिने का के पर्निय में ना यने ते. उड्ड ज्वन एव लाय भी ते तर ले प्रमान पर्म पर प्रमान में व हर्म का प्रमान में 并许牙附可引了华军师印东际:194;宋前京李州不同了不成在安村;1月初的东西中南南部外 न मेरपाय वेतातः प्रमारं क्रमहितातः परमाण्यः जानियसं एउटमः भोजमादी जाने में मेरणामेन प्राण्येन प् मात्रमात्रम देन मेर्यात्रम्य । कं क्रमंक मक्षी व मेर्यात्र प्रमेत्र प्रमेत् मिलिलिमिन ए मुराषिता जय ने में सम्याना मान जम् कि कि कि सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्म

भाषान्वाक्षः प्रशिष्ट हेम क्रिकाण पि किएक । क्र हेन क्र के क्षिण के क्ष्ण के क्षण के के क्षण के क्षण के क्ष



,CREATED=22.10.20 11:23
,TRANSFERRED=2020/10/22 at 11:25:56
,PAGES=7
,TYPE=STD
,NAME=S0004356
,Book Name=M-844-SHASTKARAM
,ORDER\_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF

[OrderDescription]